



अमृत वाणी

जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं।

-मनुस्मृति

संपादकीय

अमित शाह का जवानों से मिलना महत्वपूर्ण

बस्तर में पदस्थ सुरक्षाबलों के जवान जिस तरह अपने घर परिवार से दूर अत्यधिक कठिन और साधारण विहीन परिस्थितियों में रहते हुए कदम कदम पर खतरों के बीच अपनी जान दांव पर लगाक बस्तर को हिंसा मुक्त करने दिन रात जुटे हुए हैं उसके लिए उनकी समर्पित सेवा, हिम्मत और इमानदारी की प्रशंसा के लिए शब्द ही कम पड़ जाएंगे लेकिन फिर भी इस बात को करायि नजरंदाज नहीं किया जा सकता है कि उनकी भी अपनी भावनाएं हैं। इसलिए समय समय पर उनके मध्य जाकर उनकी हौसला अफजाई किया जाना बहुत आवश्यक है ताकि उनमें फिरी तरह की निराशा घर न कर ले और उनका मनोबल बना रहे। वे किसी भी तरह का मानसिक दबाव या तनाव के शिकार न हों। उनके अपने उच्च अधिकारी तो हमेशा उनके साथ हैं जो उनकी समस्याओं और जरूरतों को समझने और उनके समाधान की हर संभव कोशिश भी करते हैं लेकिन फिर भी यह स्वीकारने में दो राय नहीं हो सकती कि देश के किसी बड़े नेता का उनके बीच जाना उनसे घुल मिलकर चर्चा करना, उन्हें उनके साहस और वीरता के लिए बल्कि यह कहा जा सकता है कि ऐसा कदम जवानों के उत्साह और मनोबल को कई गुणा बढ़ा देता है।

केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह व्हारा 5 अप्रैल को अपने दंतेवाडा प्रवास के दौरान वहां पुलिस लाइन में नक्सली आपरेशन से जुड़े जवानों से मिलना उन्हें उनकी उपलब्धियों पर शाबाशी और बधाई देना, उनके साथ बैठकर चर्चा करने के साथ चाय पीना ऐसे ही संदेश का प्रतीक है। अमित शाह ने बस्तर पड़ुम में अपने उद्बोधन के दौरान स्पष्ट रूप से कहा कि आज बस्तर का अधिकांश क्षेत्र लाल आतंक से मुक्त हो गया है और इसमें जवानों की मुख्य भूमिका है।

देखा जाय तो बस्तर में पदस्थ ये जवान मात्र क्षेत्र को हिंसा मुक्त करने में ही नहीं बल्कि क्षेत्र के विकास से लेकर यहां के निवासियों की हर तरह की सेवा जैसे चौतरफा कार्यों से जुड़े हुए है। शासन की नियन्द नेल्लानार योजना के तहत दूरस्थ जिलों के अति संवेदनशील, दशकों से अलग थलग पड़े धूर नक्सली क्षेत्रों में सुरक्षा बल के इन जवानों व्हारा एक के बाद एक कैम्प स्थापित कर शासन के निर्देशों के तहत जिस तरह कैंपों के पांच किलोमीटर के दारों में स्थित गांवों तक बुनियादी सुविधाएं पहुंचाया जा रहा है वह किसी विशाल चुनौति से कम नहीं है। कदम कदम पर उनकी जान को खतरा होता है पर वे अपने साथ साथ गांव वालों को भी एक सुरक्षित और सुखद जीवन देने में दिन रात जुटे हैं।

निश्चय ही उनके लिए उस नेता को अपने बीच पाना जिनके बस्तर को नक्सल मुक्त करने के संकल्प को पूरा करने वे दिन रात जुटे हुए हैं विशेष मायने रखना लाजमी है। जवानों के इस संघर्ष में जहां उनके कई साथी शहीद हो जाते हैं वहीं कई गंभीर रूप से धायल भी हो जाते हैं ऐसे धायल जवानों की बेहतर विकित्या के लिए जगदलपुर और रायपुर में विशेष अस्पताल खोले जाने की केन्द्रीय गृहमंत्री की घोषणा भी निश्चय ही उत्साहवर्धक और समय की बड़ी जरूरत है।

राज-काज

मोदी और संघ की मुलाकात

नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री पद पर आसीन होने के 11 साल बाद पहली बार नारायण स्थित राष्ट्रीय स्वयं सेक्व कंपनी (आरएसएस) मुख्यालय पहुंचने के कई निहार्ता निकाल जा रहे हैं। मोदी के पहले अटल बिहारी वाजदेही ने साल 2000 में अपने तीसरे कार्यकाल में संघ मुख्यालय का दौरा किया था। मोदी भी अपने तीसरे कार्यकाल में संघ मुख्यालय गए। स्वाभाविक तौर पर मोदी ने संघ के साथ अपने अद्वृत संबंधों की जुगाली की। उन्होंने 'माधव नेत्रालय प्रीमियम सेंटर' की आधारशिला रखने के बाद कहा कि, 'संघ भारत की अमर संस्कृति और आधुनिक अक्षयकर है, जिसके आदर्श और सिद्धांत राष्ट्रीय चेतना की रक्षा करना है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि यह (संघ) देश की चेतना को ऊर्जा प्रदान करता है'। हालांकि मोदी के नामपुर जाने और संघ प्रमुख सहित अन्य पराधिकारियों से मिलने की विशेष भले मुद्दा बनाने की कोशिश में।

स्वास्थ्य के प्रति करना होगा जागरूक

संघ

वास्थ्य हमारे जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। इसान जब तक उसके कार्य करने की क्षमता भी कमज़ोर पड़ने लगती है। जब वह अस्वस्थ होने लगता है तो उसके कार्य करने की क्षमता भी कमज़ोर होती है। जब वह अस्वस्थ होने पर ही सबसे पहला सुख निरोगी काना। यानी शरीर स्वस्थ रहने पर ही सबसे पहला सुख मिलता है। आज के दौर में खानपान में लापरवाही के चलते अधिकतर व्यक्ति किसी ने किसी बीमारी से ग्रसित रहने लगे हैं। इससे उक्ते कार्य क्षमता में भी कमी आई है। मनुष्य के अस्वस्थ होने पर उपचार पर फैसे खर्च होते हैं जिससे उसके अधिक स्थिति कमज़ोर होने लगती है। इसके साथ ही बीमार व्यक्ति का पूरा परिवार भी उसके कार्य क्षमता में भी कमी आई है।

मनुष्य के अस्वस्थ होने पर उपचार पर खर्च होते हैं जिससे उसके कार्य क्षमता में भी कमी आई है। आज की जिंदगी में जो व्यक्ति अपना स्वास्थ सही रख पाता है। वह कम कम काना भी सबसे अधिक सुखी रह सकता है। इसलिए हमें सबसे अधिक अपने स्वास्थ पर ध्यान देना चाहिए।

आज दुनिया भर में मनुष्य के स्वास्थ्य को लेकर चिंता व्यक्त की जा रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के देशों को समय-समय पर चेतावनी देता रहता है। कुछ वर्ष पूर्व आई कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया को हिला कर रख दिया था। मगर वैज्ञानिकों की तपतरता से वैक्सीन निर्माण होने के चलते वह नियंत्रण में आ गई थी। मगर भविष्य में भी ऐसी कोई गारंटी नहीं है कि कोरोना जैसी महामारी पर नहीं आए। कभी भी कोई नई महामारी आ सकती है। इसलिए हमें हमारे खानपान एवं सहन-सहन व वातावरण में साधारणी चर्चा करना चाहिए ताकि हम बेवजह की बीमारियों से बच सकें।

स्वास्थ्य के प्रति संचेत रहने के लिए प्रति वर्ष

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर विशेष



7 अप्रैल को पूरी दुनिया में विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाओं और नवजात शिशुओं के स्वास्थ्य और मनावा जाता है। इस दिन को मनाने के पीछे विश्व स्वास्थ्य दिवस का लक्ष्य जीवन को बढ़ाने पर केंद्रित है। जिसका लक्ष्य स्वास्थ्य संगठन का मकसद दुनियाभर में लोगों को परिस्थित तात्पूर और शिशु मृत्यु के बारे में जागरूकता स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना है। साथ ही बीमारी के लिए गया है कि आधे भारतीयों की आवश्यक स्वास्थ्य प्रोत्साहित और प्रेरित करना। वर्तमान में इस संगठन के बैनर तले 195 से अधिक देश अपने अपने देशों को रोगमुक्त बनाने के लिए देश के नामिकों को रोगमुक्त बनाने के लिए प्रयासरत है। विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाने की शुरुआत 1950 से हुई। वैश्विक आधार पर 2024 में भारत का स्कोर 98/49/100 रहा है। विश्व स्वास्थ्य दिवस के प्रति इतने बच्चों में 41 है जबकि 66 प्रतिशत बच्चों को डीपीटी का ट्रीका देना पड़ता है।

भारतीय स्वास्थ्य रिपोर्ट के मुताबिक सर्वांगिन स्वास्थ्य की सेवाएं अभी भी पूरी तरह सुपरियोगी नहीं हैं और जो है उनकी हालत अच्छी नहीं है। स्वास्थ्य के बच्चों की मृत्यु दर 66.9 वर्ष है। इसके अलावा भारत में कम अवस्था वाले बच्चों की मृत्यु दर 66 है। शिशु मृत्यु दर जन्म लेने वाले प्रति हजार बच्चों में 41 है जबकि 66 प्रतिशत बच्चों को डीपीटी का ट्रीका देना पड़ता है।

रमेश सराफ़फ़दमोरा
(ये लेखक के अपने विचार हैं)

उच्च शिक्षा नीति में बड़ा बदलाव

संस्कृति और राष्ट्रीय एकता का संदेश देने वाला पहचान को लेकर उत्तर भारत और दक्षिण भारत में विरोध हो रहा था, तो उत्तर भारत के कुछ हिस्सों में बतावा गया था।

एक लक्षीर विचार गई। वातावर में इस समय इसे राष्ट्र के विविध भागों की अपेक्षा थी कि वे भाषा और व्यवस्था में भार्दा विविधता को प्रोत्साहित करना। पहचान के बीच के संबंधों को बेहतर तरीके से लोगों

उत्तर भारतीयों को यह महसूस नहीं हुआ कि यह केवल एक भाषा का सवाल नहीं था, बल्कि संस्कृति और आबादी का सुदृढ़ था। इस

केवल एक भाषा का सवाल नहीं था, बल्कि संस्कृति के लिए भारतीय और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के अनुसार भारत 42.8 के समय सूचकांक स्कोर के लिए लक्ष्य बनाता है। इसके लिए जानेवाले देशों में से 66वें स्थान पर हैं और अन्योंजीत होते हैं। पूरे साल भर के स्वास्थ्य का लिये जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा वैश्विक स्वास्थ्य सुखों का अनुपात भी संतोषजनक नहीं है। हमारे देश में 1000 लोगों पर एक डॉक्टर भी उपलब्ध नहीं है। अस्पतालों में बिस्तर की उपलब्धता भी कम है। और केवल 28 प्रतिशत लोग ही बेहतर साफ़पर्सी का ध्यान रखते हैं। पिछले कुछ सालों में हमारे देश में कैसर जैसी जानलेवा बीमारियों का प्रभाव बढ़ा।

डॉ. ब्रॉम्पीटी अल्जून
(ये लेखक के अपने विचार हैं)